भाषा माने क्या?

हममें से कई लोग भाषा को संप्रेषण का साधन मानने के इतने ज्यादा आदी हो चुके हैं कि हम सोचने, महसूस करने और चीजों से जुड़ने के साधन के रूप में भाषा की उपयोगिता को अक्सर भूल जाते हैं। भाषा के उपयोग का यह बड़ा दायरा उन लोगों के लिए बेहद महत्वपूर्ण है जो छोटे बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं। शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किंतु मज़बूत ताकत की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं, यहां तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है। यह सब कैसे होता है–इस पुस्तक–विशेषतया इस अध्याय–का यही विषय है।

लेकिन पहले हमें एक ऐसी बात साफ कर लेनी चाहिए जिस पर अक्सर काफी विवाद छिड़ा रहता है। स्कूली अध्यापक भाषा के नाम पर 'हिंदी' और 'अंग्रेजी' या अन्य किसी भाषा को एक स्कूली विषय की तरह लेने के आदी हैं। इसलिए वे सोचेंगे कि यह पुस्तक किसी खास भाषा की पढ़ाई के बारे में होगी। दूसरी तरफ विशेषज्ञ हैं जो बच्चे की 'पहली भाषा' और 'दूसरी भाषा' इत्यादि में गहरे भेद करने के आदी हैं। अध्यापक और विशेषज्ञ दोनों सोचते हैं कि भाषा की शिक्षा पर किसी किताब की शुरुआत एक खास भाषा के नियमों, उसकी आम संरचनाओं, शब्दावली इत्यादि के विवरण से होनी चाहिए।

यह सब इस किताब में नहीं है। यह पुस्तक किसी एक खास भाषा के अध्यापन की निर्देशिका कतई नहीं है। 'यह पुस्तक उन जरूरतों के बारे में है जिन्हें कोई भी भाषा बच्चों के जीवन में पूरा करती है।' दुनिया का हर बच्चा– चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो–भाषा का इस्तेमाल कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य है दुनिया को समझना, और उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक बढ़िया औजार का काम देती है। जब तक हम बच्चे की निगाह से देखने और बच्चे की जिंदगी में भाषा की भूमिका को समझने में असमर्थ रहते हैं, तब तक हम अध्यापक, माता–पिता या देखरेख करने वालों के रूप में अपनी भूमिका ठीक से तय नहीं कर सकते।

भाषा और करना

बच्चों की भाषा का संबंध उन अनुभवों से है जिन्हें वे अपने हाथों और शरीर से स्वयं करते हैं और उन वस्तुओं से भी है जिनके संपर्क में वे आते हैं। बचपन में शब्द और क्रियाकलाप साथ–साथ चलते हैं। क्रियाकलाप और अनुभवों को आत्मसात करने और व्यक्त करने के लिए

शब्दों की जरूरत होती है। कोई अनुभव जब पूरा हो चुकता है, उसके बाद भी वह शब्दों के जरिए उपलब्ध रहता है। बच्चे जिन चीजों के संपर्क में आते हैं उनसे और घनिष्ठ संबंध बनाने के लिए वे शब्दों की मदद लेते हैं। दूसरी तरफ, ऐसे शब्द, जो बच्चों के सक्रिय अनुभवों और वस्तुओं से जुड़े नहीं होते, उनके लिए खाली और बेजान रहते हैं। 'बिल्ली', 'दौड़ना', 'गिरना', 'नीला', 'नदी' और 'खुरदरा' जैसे शब्द यदि पहले–पहल किसी क्रियाकलाप या अनुभव के संदर्भ में नहीं आएं तो उनका अर्थ बच्चे के लिए बहुत सतही रहेगा। केवल एक सक्रिय अनुभव के बाद ये शब्द एक बिंब से जुड़ते हैं और भविष्य में सार्थक इस्तेमाल के लिए उपलब्ध होते हैं।

बच्चे के शारीरिक अनुभवों और शब्दों के बीच यह संबंध बड़ों, विशेषतया अध्यापकों पर एक निराली जिम्मेदारी डालता है। एक अध्यापक के रूप में आप शायद यह उम्मीद करते होंगे कि माता–पिता ने अपने बच्चों को तरह तरह के अनुभव पहले ही करा दिए होंगे। पर यह बात अधिकांश माता–पिता पर लागू करना मुश्किल है। ज्यादातर माता–पिता में या तो इतना विश्वास नहीं होता कि अपनी दिनचर्या में चीजों को देखने और करने की बच्चों की धीमी रफ्तार को जगह दे सकें। बड़े अक्सर काफी परेशान हो जाते हैं अगर बच्चा नल में पानी की धारा से आधे घंटे खेलता रहे या सारे बर्तनों को फर्श पर बिखेर दे या छाते को सैकड़ों बार खोले और बंद करे। कभी कभी चीजों को या फिर बच्चे को नुकसान या चोट से बचाने की खातिर बड़े कुछ इने–गिने अनुभवों को छोड़कर बाकी पर पाबंदी लगा देते हैं।

माता–पिता ने जो भी किया हो या न किया हो, अध्यापक की जिम्मेदारी स्पष्ट है। उसे ऐसा वातावरण पैदा करना है जिसमें बच्चे भाषा को लगातार जीवन के अनुभवों और चीजों से जोड़ सकें। ऐसा करने के लिए ये बातें मददगार होंगीः

- बच्चे स्कूल में कई तरह की वस्तुएं (जैसे पत्तियां, पत्थर, पंख, तिनके, टूटी–फूटी चीजें) लाएं और उनके बारे में बात करें, पढ़ें, लिखें;
- बच्चों से उन अनुभवों के बारें में कहने, लिखने और पढ़ने को कहा जाए जो उन्हें स्कूल के बाहर हुए हैं;
- बच्चों को कक्षा से बाहर ले जाया जाए जिससे वे स्कूल के गिर्द फैली दुनिया की तमाम छोटी–मोटी चीजें (जैसे टूटी हुई पुलिया, कीचड़ से भरा गड्ढा, मरा हुआ कीड़ा, घोंसले में अंडे) बारीकी से देख सकें और उनकी चर्चा कर सकें। स्कूल के पड़ोस की ऐसी शोध–यात्राएं भाषा सीखने के लिए मूल्यवान सामग्री दे सकती हैं, जैसा कि यह पुस्तक बताएगी।

ऐसे स्कूल में, जहां बच्चे अपने हाथों से तरह तरह के काम नहीं कर पाते, जहां वे अधिकांशतया बैठे और अध्यापक की बातें सुनते रहते हैं, और जहां छूने, उलटने–पुलटने, तोड़ने और ठीक करने के लिए चीजें नहीं होतीं, भाषा के कौशलों का विकास अच्छी तरह नहीं हो सकता।

भाषा क्या क्या करती है ?

जिन लोगों ने बच्चों की भाषा का अध्ययन किया है, उनके अनुसार बच्चे बातचीत की बुनियादी क्षमता हासिल करते ही भाषा का प्रयोग नाना किस्म के उद्देश्यों के लिए करना शुरु कर देते हैं। इनमें से कुछ उद्देश्य इस प्रकार हैं :

1. अपने काम का संचालन

बच्चे कुछ करने के साथ साथ उसके बारे में बात करते जाते हैं। यह बात अपनी गतिविधि पर एक तरह की निजी टीका होती है। संभवतया यह टीका उन्हें अपनी गतिविधि कुछ और देर तक जारी रखने में मदद देती है और उनकी दिलचस्पी बनाए रखती है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि टीका कोई सुन रहा है या नहीं। संभव है गीली रेत में सुरंग या किले बनाते हुए छोटे बच्चों के दल में हर बच्चा अपनी टीका अलग चालू रखे। हो सकता है, यह टीका दूसरे को सिर्फ कुछ

तीन से आठ साल के बच्चे को उस वक्त गौर से देखिए जब वह अकेले कुछ कर रहा हो या खेल रहा हो। वह जो कहे, ध्यान से सुनिए। इसी तरह कई और बच्चों को, जिनमें लड़के–लड़कियां दोनों हों और अलग अलग उम्र के हों, देखिए।

क्या आपने उनकी एकांत 'बात' में कोई व्यक्तिगत फर्क पाया? क्या यह 'बात' बच्चों को एक काम में रुचिपूर्वक लगे रहने में मदद देती है ? क्यों ?

बुदबुदाहट की तरह सुनाई दे।

2. दूसरों के क्रियाकलाप और ध्यान का संचालन

भाषा के इस उपयोग से माता–पिता और अध्यापक के रूप में हम अच्छी तरह परिचित हैं क्योंकि हमारा बहुत–सा समय बच्चों की मांगों को पूरा करने में लगता है। अक्सर हम शारीरिक किस्म की मांगों के प्रति सचेत रहते हैं, पर दूसरी तरह की मांगें–जिनमें बौद्धिक और भावनात्मक मांगें शामिल हैं– भी महत्वपूर्ण हैं। बच्चे अजीब या आकर्षक चीजों की ओर ध्यान खींचने के लिए

भाषा का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें यह अपेक्षा रहती है कि जिस चीज ने उनका ध्यान खींचा है, वह उनकी बात सुनने वाले का ध्यान भी खींचेगी।

यदि आप बच्चों की एक टोली को गौर से देखें तो पाएंगे कि वे एक–दूसरे का ध्यान अक्सर किसी ऐसी चीज या किसी चीज की ऐसी विशेषता की चर्चा करके खींचते हैं जिसे, वे सोचते हैं, दूसरा देख न पाया होगा। दूसरों से अपेक्षा प्रकट करना ही भाषा के इस उपयोग की विशेषता है : अपेक्षा यह कि 'जो मैंने देखा उसे दूसरे भी देखना चाहेंगे।' यह अपेक्षा मानवीय संबंधों और साथ साथ रहने के आनंद को लेकर एक गहरी मान्यता पर टिकी है। यदि वह व्यक्ति, जिसका ध्यान खींचा जा रहा है, इस अपेक्षा को पूरा नहीं करता है तो भाषा के विकास की बुनियाद को चोट पहुंचती है।

3. खेलना

अधिकांश बच्चों के लिए शब्द ढाई साल की उम्र से खेल और आनंद का एक प्रमुख साधन बन जाते हैं। अलग अलग स्वर में दुहरा कर, नए रूपों और मौलिक संदर्भों में रखकर बच्चे शब्दों से खेलते हैं और संतुष्ट होते हैं :

'दूध–जलेबी जग्गग्गा
पर इसमें है मग्गग्गा !'

'गुड़िया को बादल में भेज दिया।
अब रोटी खाऊंगी। गुड़िया कल से
रो रही थी।'

'मैं चम्मच में बाल्टी रखूंगा।
उससे कुएं का दूध निकालूंगा !'

अनुपयुक्त जगह पर शब्द का प्रयोग करना उन्हें भाता है। उन्हें ऐसी कविताएं जल्दी से याद हो जाती हैं जिनमें इसी तरह शब्दों की खींचतान की गई हो। आशय यह है कि छोटे बच्चे शब्दों को खिलौनों की तरह इस्तेमाल करते हैं। शब्दों से खेलना बच्चों की रचनाशक्ति और ऊर्जा को

घर के अंदर या गली में अकेले या टोली बनाकर खेलते—रस्सी कूदते, दौड़ते, उछलते, गेंद से टप्पा मारते हुए—बच्चे जो पंक्तियां दुहराते हैं सुनिए। अपने इलाके में बच्चों के पारंपरिक खेलगीत इकट्ठे कीजिए। यदि आपने मेहनत से काम किया तो संभव है कि आप आधुनिक 'मीडिया' और भाषा की रूढ़िग्रस्त शिक्षा के हमले से बच रहे खेलगीतों का एक छोटा—मोटा संग्रह बना सकें।

आपको जो खेलगीत मिलें, उन्हें तरतीब से लिख लीजिए। एक ही गीत के विविध रूपों को ढूंढिए और दर्ज कर लीजिए। आपको जहां व्याकरण की गलती और शब्दावली की खींचतान नजर आती हो, वहां सुधार कतई न कीजिए।

बच्चों के खेलगीत भाषा के बेहद रचनात्मक और ताकतवर इस्तेमाल के निराले स्रोत हैं और वे भाषा के कई बुनियादी कौशल (जैसे पढ़ना) सिखाने के बहुत उपयोगी साधन हैं। उन्हें इस्तेमाल करने के कुछ सुझाव अगले अध्याय में दिए गए हैं।

बच्चों के कुछ पारंपरिक खेलगीतों के नमूने हैं :

सूख सूख पट्टी	**शान्ती मन भान्ती**
चंदन गट्टी	**कहना क्यों नई मानती**
राजा आया	**पंडित जी बुलाने आए**

बाहर लाने में अद्भुत भूमिका निभा सकता है।

4. समझाना

बच्चों की बात का उद्देश्य कई बार यह स्पष्ट करना होता है कि कोई चीज कैसे हुई। उदाहरण के तौर पर यदि आप एक बच्चे से पूछें कि बारिश कैसे हुई तो शायद वह आपको बताएगा कि पहले आसमान काले बादलों से घिर गया, फिर छोटी छोटी बूंदें टपकने लगीं, फिर बारिश हुई जो बाद में इतनी तेज हो गई कि कोई चीज दिखाई तक न दे। घटनाक्रम बताकर बच्चा यह समझाता है कि एक बड़ी घटना कैसे घटी।

भाषा के इसी प्रयोग से कहानियां जन्म लेती हैं। इस दृष्टि से कहानियां चीजों की व्याख्या करने का साधन होती हैं। जाहिर है कि सब कहानियां चीजों की विश्वसनीय या वैज्ञानिक व्याख्या नहीं

करतीं। वे जीवन की व्याख्या करने की हमारी इच्छा की प्रतीक होती हैं। जिस तरह बड़े, दुनिया की घटनाओं या राजनीति की व्याख्या करने को उत्सुक रहते हैं, उसी तरह छोटे बच्चे भी जिंदगी की घटनाओं की व्याख्या करना चाहते हैं।

कोई चीज क्यों शुरू हुई? यह समझाने वाली कहानियां इकट्ठी कीजिए। इस तरह की कई कहानियां आपको स्थानीय लोक कथाओं में मिलेंगी। बारिश क्यों होती है या आदमी ने आग कैसे ढूंढी–ऐसी एक कहानी नीचे दी गई है जो समझाती है कि हाथियों ने उड़ने की क्षमता कैसे गंवाई। इन कहानियों को भाषा के अध्यापन में काम में लाने के कुछ तरीके 'बात' और 'पढ़ना' शीर्षक अध्यायों में देखिए।

आसमान में हाथी

बहुत पहले एक जमाने में भारत के हाथी उड़ लेते थे। आज की तरह हाथी तब भी बहुत बड़े होते थे। उनका रंग बादलों की तरह सलेटी था। बादल आखिर उनके भाई ही तो थे। बादलों की तरह हाथी भी आसमान में जहां चाहे उड़ सकते थे। बस उन्हें अपने कान फटफटाने की देर थी।

बादलों की ही तरह वे अपना आकार भी बदल सकते थे। वे जो चाहे बन जाते थे–कभी एक राक्षस तो कभी छोटी–सी बिल्ली। वे कभी किले की तरह दिखते तो कभी पहाड़ की तरह और कभी दौड़ते हुए एक कुत्ते की तरह।

गर्मियों के मौसम में एक दिन मोती की तरह चमकते हुए सलेटी हाथी धूप में उड़ रहे थे। वे एक गांव के ऊपर से गुजरे जहां छोटे–छोटे बच्चे खेल रहे थे, एक खेत से गुजरे जहां किसान जुताई कर रहा था, एक नदी पर से गुजरे जहां लड़के भैंसों को नहला रहे थे। वे बातूनी बंदरों से भरे एक जंगल के ऊपर से भी गुजरे।

लेकिन आकाश में बहुत ऊपर बड़ी गर्म हवा की एक लहर बह रही थी। हाथियों को देखकर वह उनके पीछे हो ली और सीधे उनकी सूंड में घुस गई। हवा क्या थी, काली मिर्च थी। हाथी लगे छींकने। छींकते छींकते परेशान होकर उन्होंने सोचा कि कोई छायादार ठंडी जगह ढूंढ कर थोड़ी देर सुस्ता लें। उनके ठीक नीचे आम के बड़े बड़े पेड़ थे। उनके नीचे ठंडक थी, छाया भी थी और आमों की बढ़िया खुशबू थी। गर्म हवा से बचने के लिए हाथी आहिस्ता से आम के सबसे बड़े पेड़ पर जा उतरे।

संयोग की बात थी कि उसी पेड़ के नीचे एक मास्टर जी और उनके छात्र बैठे हुए थे। स्कूल के अंदर उस दिन बहुत ज्यादा गर्मी थी। मास्टर जी थके हुए थे और बच्चे थे एकदम बेचैन। वे अपनी पेंसिलें तोड़ते, सारे सवाल गलत करते, फिर खुसफुसाते, हंसते और नन्हें चूहों की तरह कुलबुलाते। वे एक क्षण को आराम से नहीं बैठ पा रहे थे।

मास्टर जी परेशान हो गए। पैर जमीन पर ठोककर उन्होंने अपना डंडा हवा में घुमाया और बच्चों पर बरस पड़े। तभी अचानक उन्हें ख्याल आया–'अगर ये बच्चे नहीं संभलते हैं तो मैं एक जादूमंत्र बोलकर इन सबको खरगोश बना दूंगा!'

5. जीवन को प्रस्तुत करना

भाषा का यह काम उसके सारे अन्य कामों में शामिल है पर यदि हमने उसे अलग से नहीं जांचा तो संभव है हम उसे चूक जाएं। बड़ों की तरह बच्चे अक्सर भाषा का प्रयोग बीते हुए को याद करने के लिए करते हैं–कोई घटना, व्यक्ति या कोई छोटी–मोटी चीज। जो चीज अब हमारे आसपास है, उसे हम शब्दों के जरिए फिर पैदा कर सकते हैं और इस तरह हम जो रचते हैं वह कई बार इतना यथार्थ दिखता है कि हम उस पर लंबे समय तक बातचीत कर सकते हैं।

बच्चे अक्सर चीजों और अनुभवों को इसलिए प्रस्तुत करते हैं कि उन्हें स्वीकार कर सकें। (शायद किसी गहरे भावनात्मक स्तर पर)। किसी चीज से डरा हुआ बच्चा उसके बारे में बीसियों बार बताता है जब तक वह अपने भीतर उसके लिए जगह नहीं बना लेता। खास तौर से जब बच्चा किसी नई बात से चौंकता है तो उसे आम चुनावों में शामिल करने के उद्देश्य से कई बार दोहराता है। चौंधाने वाली घटना में जो अनिश्चय, भ्रम और कई बार डर छिपा रहता है, वह उसे दुहराने से दूर हो जाता है।

6. जुड़ना

जब हम किसी की कहानी सुनते हैं–जो उसके अपने या किसी दूसरे व्यक्ति के अनुभव पर आधारित होती है–तो हम उस कहानी के चरित्रों और घटनाओं से स्वयं को जोड़ने की कोशिश करते हैं। कहानी से जुड़ने की खातिर हम अपनी मौजूदा जिंदगी और यहां तक कि अपने पिछले सीमित अनुभवों को लांघ जाते हैं। जब कोई बच्चा किसी खिलौने की भावनाओं की चर्चा करता है तो वह स्वयं को खिलौने की स्थिति में रख रहा होता है। दूसरे पर क्या बीत रही है, यह हम भाषा के जरिए अनुभव कर सकते हैं।

7. तैयारी

बातचीत का विषय बहुत बार ऐसी घटनाएं होती हैं जो अभी घटी नहीं हैं और उनमें कुछ ऐसी भी होती हैं जो शायद कभी न घटें। बच्चे कई बार अपने डर, अपनी योजनाएं, अपेक्षाएं और अजीब परिस्थितियों में क्या होगा, इस पर अपने विचार प्रकट करते हैं। भविष्य की तस्वीर रचने में शब्द उनकी मदद करते हैं। कभी कभी यह तस्वीर भविष्य को साकार बनाने में मदद करती है; कभी ऐसा भी होता है कि यह तस्वीर उन्हें भविष्य का सामना करने की सामर्थ्य देती है।

8. पड़ताल और तर्क

हरेक स्थिति में एक 'समस्या' छिपी होती है जिसे हल करने के लिए छोटे बच्चे को यह ढूंढना पड़ता है कि अमुक चीज़ अपने मौजूदा रूप में क्यों है। कई प्रश्न ऐसे होते हैं जिसका उत्तर छोटा बच्चा सफलतापूर्वक ढूंढ सकता है। जैसे, बस एकाएक क्यों रुकी? या उसे ठंडे पानी से नहाना क्यों पसंद नहीं है? तीन साल का बच्चा इन 'समस्याओं' को समझ सकता है, हालांकि यह जरूरी नहीं कि सब बच्चे किसी बात का सटीक कारण साफ–साफ बतला सकें। प्रायः वे बच्चे ऐसा कर पाने में समर्थ होते हैं जिन्होंने बड़ों को भाषा के सहारे किसी चीज़ की पड़ताल करते या तर्क करते सुना हो अथवा जिन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहन मिला हो।

ऊपर दी गई समस्याओं के अलावा कई समस्याएं ऐसी होती हैं जिन्हें छोटा बच्चा 'वैज्ञानिक' अर्थ में नहीं सुलझा सकता। उदाहरण के लिए 'बारिश' क्यों होती है 'बहुत तेज़ हवा से पेड़ क्यों गिर जाता है जैसे सवालों का सही हल चार–पांच वर्ष के बच्चे की पहुंच के बाहर है। इसके बावजूद, ऐसी समस्याएं भी पड़ताल के लिए भाषा के प्रयोग के बहुत उम्दा मौके उपलब्ध करा सकती हैं। इससे फर्क नहीं पड़ता कि दिया गया कारण सही है या नहीं। महत्व इस बात का है कि बच्चा भाषा का इस्तेमाल तर्क करने, किसी नई बात को बूझने के लिए करे। भाषा से यह काम लेते

भाषा के जिन आठ कामों की चर्चा अभी हमने की है, क्या आप उन्हें पहचान सकते हैं?

अपनी परीक्षा लेने के लिए बच्चों की बातचीत के इन आठ उदाहरणों को भाषा के आठ कामों के तहत रखिए :

1. **बादल चले गए। बारिश रुक गई।**
2. **मैं जाऊंगा जम्मा। वहां मिलेगा मम्मा।**
3. **इस तरह नहीं। ये देखो घुंडी।**
4. **पानी रोज़ सवेरे इतने सारे घरों में कैसे पहुंच जाता है?**
5. **मैं इस कप को यहां रखूंगा। फिर रामू को आवाज दूंगा।**
6. **वे मिठाइयां बिल्कुल वैसी हैं जैसी जीत चाचा लाए थे।**
7. **दिवाली पर मुझे नई कमीज मिलेगी।**
8. **बिल्कुल बाजार जैसा था। इतनी सारी बत्तखें इतना शोर मचा रही थीं।**

बड़ों को कोई बच्चा जितना अधिक सुनेगा, भाषा का यह काम उतना ही बच्चे की पहुंच के भीतर आता जाएगा।

हमारा बात का असर हम पर ही पड़ता है

बच्चों के जीवन में भाषा की विभिन्न जिम्मेदारियों की इस चर्चा से एक बात यह स्पष्ट होती है कि भाषा एक बेहद लचीला माध्यम है। हम उसे जीवन की किसी भी परिस्थिति के अनुसार ढाल सकते हैं। उसे अपनी जरूरत के अनुसार ढाल कर हम परिस्थिति को भी अपने अधिक अनुकूल बना लेते हैं। रोज़ाना की जिन्दगी में इसके उदाहरण ढूंढे जा सकते हैं। जब हम किसी से नाराज़ होते हैं तो अपने गुस्से को प्रकट करने के लिए शब्द व स्वर चुनते हैं जो परिस्थिति पर हमारी इच्छा के अनुसार असर डालें। लड़ने की इच्छा हो तो हम कड़े शब्दों का प्रयोग करते हैं मामले को शांत करना हो तो नरम शब्दों और धीमे स्वर से काम लेते हैं।

हम कह सकते हैं कि **भाषा को लचीले ढंग से इस्तेमाल करने की क्षमता काफी हद तक यह तय करती है कि जीवन की विभिन्न स्थितियों का सामना हम किस तरह करेंगे।** एक स्तर पर हमारी भाषा किसी स्थिति में हमारी प्रतिक्रिया प्रकट करती है। एक अन्य स्तर पर हमारी भाषा उस स्थिति को, जिससे हम जूझ रहे हैं, प्रभावित करती है। हमारे इर्दगिर्द हर वक्त जो कुछ हो रहा होता है, भाषा उस सबसे निपटने में हमारी सहायता करती है। हम चाहे उस सबमें स्वयं शरीक हों या सिर्फ उस पर विचार कर रहे हों, भाषा की मदद हमें दोनों दशाओं में मिलती है।

हम किसी घटना के प्रत्यक्ष गवाह हों या न हों उस घटना को प्रस्तुत करने के लिए इस्तेमाल की गई भाषा हमारी प्रतिक्रिया पर असर डालती है। हजारों चीजें रोज़ हमसे बहुत दूर स्थित जगहों पर होती रहती हैं। ये चीजें हम तक अखबार की खबर के रूप में पहुंचती हैं। एक तरह से अखबार हमें किसी घटना की तस्वीर बनाने में मदद देता है, उसी तरह जैसे एक बच्चा सड़क पर कोई चीज़ देखकर अपनी मां को बताए। अखबार या बच्चे द्वारा बनाई गई तस्वीर उतनी ही वास्तविक या सटीक होगी जितनी सटीक तस्वीर बनाने के लिए प्रयोग की गई भाषा होगी। कोई बयान कितना सटीक या सही है, यह प्रायः बयान देने वाले के इरादे पर निर्भर होता है – यानी सटीकता में हमेशा कमी–बेशी रहना स्वाभाविक है। यदि बच्चा एक दुर्घटना देखकर डर गया है तो संभव है कि वह उसे कुछ बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत करें। बढ़ा–चढ़ाकर कहने से वह अपने डर का औचित्य सिद्ध करता है और इस तरह उस दृश्य से, जिसे उसने देखा है, समझौता करने में समर्थ होता है।

आखिर बात यह है कि भाषा हमारी अपेक्षाओं पर असर डालती है। चीजों को धैर्यपूर्वक क्रम से समझाने का शौकीन आदमी दूसरों में ऐसी ही अपेक्षा करता है। इसी प्रकार चीज़ों की गहराई से पड़ताल करने वाला व्यक्ति उम्मीद करता है कि दूसरे उसकी पड़ताल में रुचि लेंगे। इस तरह

के व्यक्ति पड़ताल और व्याख्या के लिए भाषा का प्रयोग करके एक ऐसा वातावरण रचते हैं जिसमें व्याख्या और पड़ताल महत्वपूर्ण काम माने जाते हों। इसके विपरीत यदि किसी संस्था या समुदाय में भाषा का प्रयोग इन उद्देश्यों के लिए नहीं किया जाता हो तो वहां बड़ें हो रहे बच्चों को ध्यान से कोई बात समझाने या धैर्यपूर्वक तर्क करने की आदत शायद ही पड़ सके। यदि माता–पिता और अध्यापक भाषा का इस्तेमाल मुख्यतया बच्चों को नियन्त्रण में रखने के लिए करते हों तो यह स्वाभाविक है कि बच्चे भाषा को नियंत्रण का साधन मानने लगेंगे। यह बहुत संभव है कि बड़े होकर वे ऐसा कोई काम न करना चाहें जिसके लिए उन्हें आदेश न दिया गया हो।

हमने इस अध्याय की शुरूआत इस प्रश्न के साथ की थी कि भाषा बच्चे को व्यक्तित्व–उसकी दृष्टि, क्षमताओं, मनोवृत्तियों, रुचियों और मूल्यों–को क्यों प्रभावित करती है। इस प्रश्न का उत्तर अब हम यह कह कर दे सकते हैं कि भाषा बच्चे के व्यक्तित्व को इसलिए प्रभावित करती है क्योंकि **बच्चा भाषा द्वारा रचे गए वातावरण में जीता और बड़ा होता है**। इस वातावरण को बनाने में अध्यापक काफी योग देता है। यदि अध्यापक बच्चे के जीवन में भाषा के विभिन्न कार्यक्षेत्रों के प्रति संवेदनशील है तो वह बच्चे की बौद्धिक और भावनात्मक जरूरतों के अनुकूल कदम उठा सकता है। अलग–अलग अवसरों पर बच्चे द्वारा प्रयोग की गई भाषा पर अध्यापक की प्रतिक्रिया बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि प्रतिक्रिया दिखाती है कि अध्यापक बच्चे द्वारा एक खास ढंग से प्रयोग की गई भाषा का उद्देश्य समझ रहा है तो ऐसी प्रतिक्रिया भाषा–प्रयोग के उस ढंग को और समृद्ध बनाएगी। इसके विपरीत यदि अध्यापक की प्रतिक्रिया 'सही' और 'गलत' के संबंध में किन्हीं धारणाओं पर आधारित हो तो वह बच्चे की स्वतंत्र अभिव्यक्ति और संवाद–क्षमता के रास्ते में बाधा खड़ी करेगी।

यह लेख कृष्ण कुमार की पुस्तक 'बच्चे की भाषा और अध्यापक : एक निर्देशिका' से संकलित है।